॥ श्रीः ॥

रुक्मिणीहरण नाटक ।

जयपुरनिवासीमथुरादासनिर्मित ।

जिसमें ।

बडे बडे शूर बीर दैत्यराजोंके मध्यसे श्रीरुक्मिणीका लीलापूर्वक हरणकर लीलाविग्रहधारी ब्रज-विहारीजीका उनसे परिणय करना नाटककी छटामें वर्णितहै ।

उसीको ।

खेमराज-श्रीकृष्णदासने
बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७४, शके १८३९.